निश्तुकी

निश्तुकी

उमेश मंडल

ISBN : 978-93-80538-37-2

मूल्य: भा. रु.100/-
पहिल संस्करण : 2009

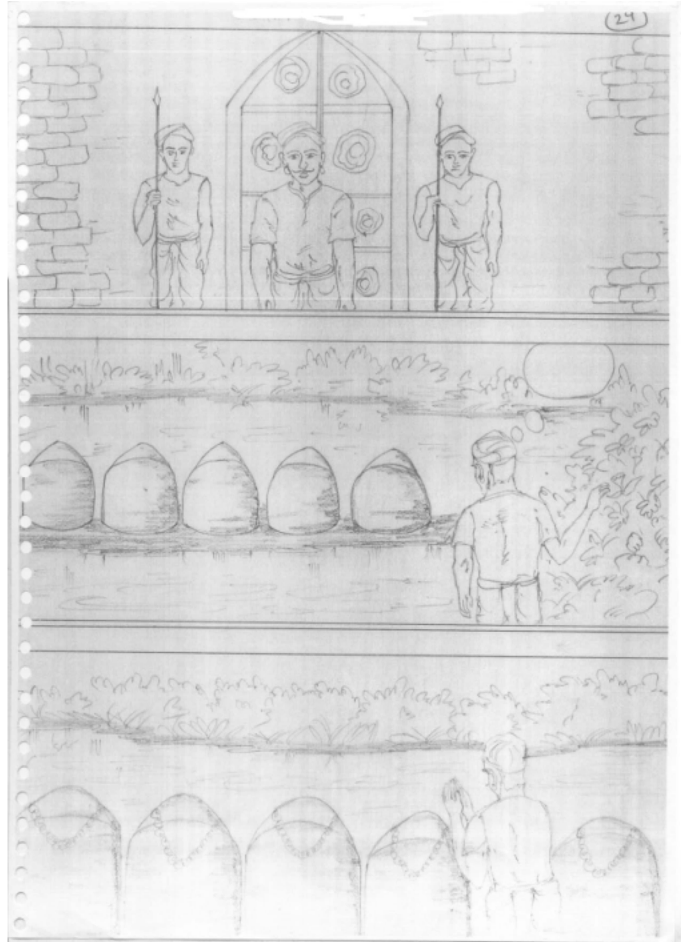
श्रुति प्रकाशन रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११)२५८८९६५७
Website:http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at: Ajay Arts, Delhi-11...2
टाइप सेट- आशीष चौधरी
Distributor : *Pallavi Distributors*, Ward no- 6, Nirmali (Supaul), मो.- 957245.4.5, 9931654742
Nistuki: Anthology of Maithili Poems by Umesh Mandal

अनुक्रम

हँसैत लहास

लहास माने मुइल
मुइल माने लहास
ई के नहि बुझत हठात्
गुम-सुम भेल छल जँए ओ
बुझाइत छल लहास तँए ओ
मुदा,
आब ओ बाजत
बजैत-बजैत हँसत
अहाँक कृतिपर
बनल संस्कृतिपर।



कविता

हम नइ बिसरब
अपन सनातन आ संस्कार
नहि बिसरक चाही अहुँकेँ अपन आचार
दोस बनब वा दियाद-बेहाल
आकि करब खाली हाल-चाल
तैयार भए गेल अछि सबालक महाल

अहाँ नै बुझै छिऐ
बनि जाउ दियाद
अहाँ करू किछु रियाज
पाँति राखू चारि याद

यौ दोस अहाँ आनू अपन होश
कए लिअ स्वीकार
हे यौ दियाद

हिया गुनि भरल
दियाद सुनि पड़ल
फाँट बीचमे आबि धूनि पड़ल
हट, हट, हट नै तँ घसक

फाँट करए उद्घोस
दुनू अपन ठाम बेहोश
मुदा,
तैयार भेल सोर-पोर
कल्याणले नहि जोर
अपन फाँटले ताबरतोड़।



बाधा

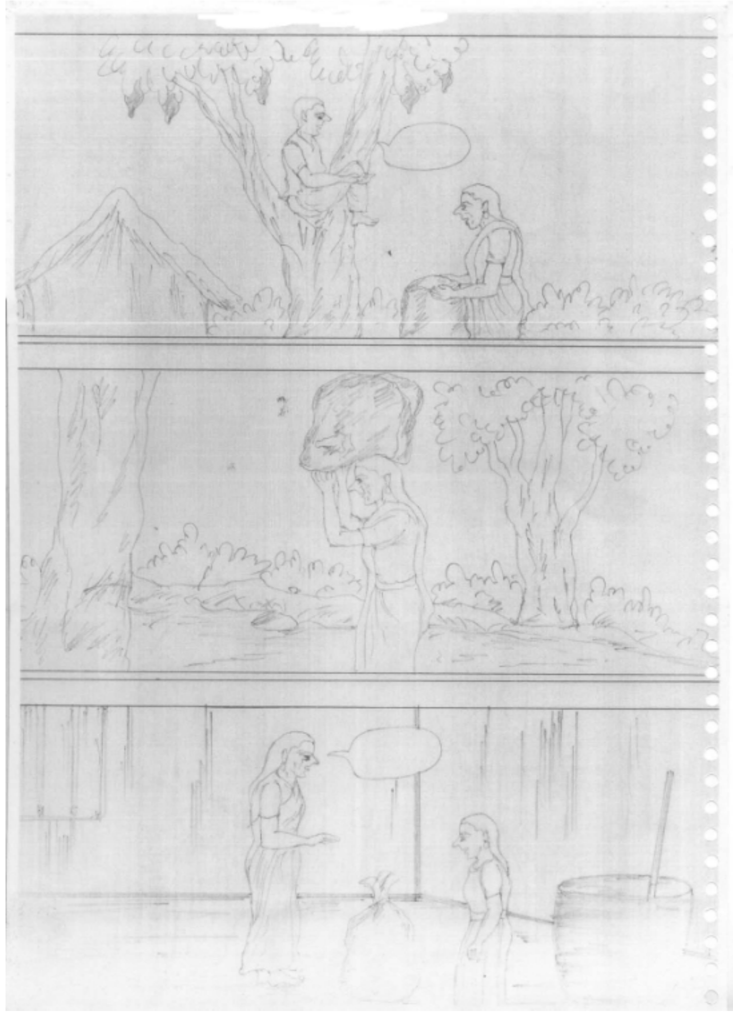
विदा भेल मंगला पूभर
कान्हपर टँगने अछि साइकिल बाउलपर
कहुना कऽ लगिचेलक
लटपटाइत पहुँचल
धारक कछेरमे

बिनु पानिक अछि धार
चक-चक करैत अछि बाउल चारूकात
नाउ नहि बाउल देखि भेलै
मंगलाकेँ थोड़े होश एलै
अपन छूछ जेबीपर भरोस भेलै
आब टपैमे कोनो नइ हएत बाधा
पहुँचबे करब सरायगढ़क ओइपार
मुदा,
मंगला लसैक गेल घाटपर
नजरि दौड़ौलक अपन कोनो लाटपर

अपन जेबीमे देने हाथ
तकैए चारू कात
आब की करबै हौ बाप

ई तँ लेबे करतै घाटी
जेना लगैए एकरा उठल छै आँति
सुखलौ घाटक लेतै खेबाइ
नै देबै तँ देत ई रेबाड़ि

सहए भेल मंगला घुरि गेल
पछिमे मुरि गेल।



भोगी

नाच कराए बानर
चाउर खाए बबाजी
बीचमे तँए अछि सरोकारी
विकासक नाओपर भऽ रहल अछि नाच
मानसिकता, मानसिकता, मानसिकता
पसरल अछि चारूकात

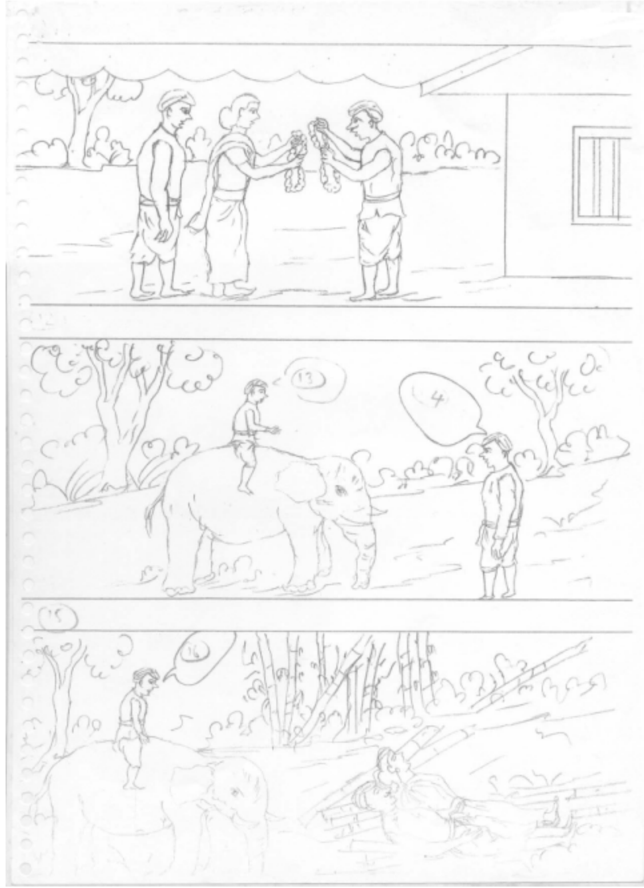
नीक बात
किएक नै हुअए विकास
बिक रहल अछि चारूकात
ब्लड प्रेशर आ डायबिटीजक गोली
संगे-संग
तैयो बबे बनल छथि तियागी
भरि जीवन भोजन केलनि बैसारी
ऊपरसँ दवाइयोकेँ बढ़ौलनि बेपारी
भोग करैत-करैत भेल छथि अघोर

तइपरसँ रटना लगेने छथि ताबड़तोर
स्वर्ग जाए चाहैत छथि सोरपोर
हमरा बीचमे हुअए कोनो नै बाधा
हम सबदिन रहलौं मधुशाला
बनलै तँ अछि विचारशाला
जइमे लटकल अछि बड़का ताला।



छठि

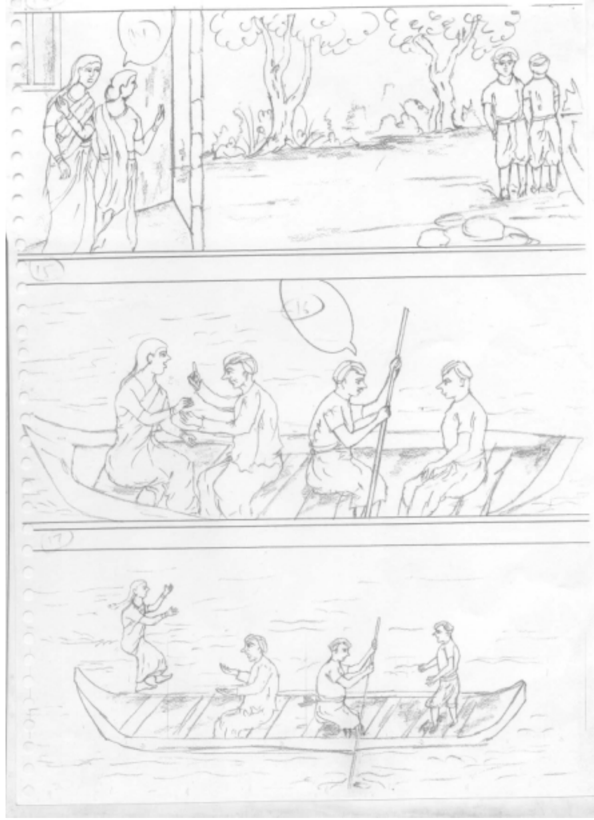
पोखैरक चारूकात
बनौलक गौआँ घाट
भरल पथिया लऽ धेलक सभ बाट
पहुँचल सभ हाली
सजेलथि अपन-अपन डाली
जरबाक लेल तैयार भेल दिआरी
हाथिओ केलक अपन तैयारी
जरैत कुरनीपर दीप धेलक माथपर
अछि आथी बैसल आइ घाटपर
टौकना, खमरूआ, सुथनी, हरदी, आदी
सभ पुराओत अपन-अपन फर्ज
चुकाबए चाहैत अछि अपन कर्ज
सूर्यकँ देत सभ अर्घ।


13

फंदा

जखने करब नखरा
सभ कहबे करत हमर दऽ दिअ बखरा
जँ अहाँ रहब शांतचित
भेटत अपन सभ परचित
करब अहाँ कल्याणक काज
सभकँ हेतै अपने-आपपर लाज

लाज सिखबैत अछि काज
आ मुँहो मोड़ैत अछि हठात्
भऽ जाइत अछि कोनादन
धऽ लैत अछि अमती काँटसन।

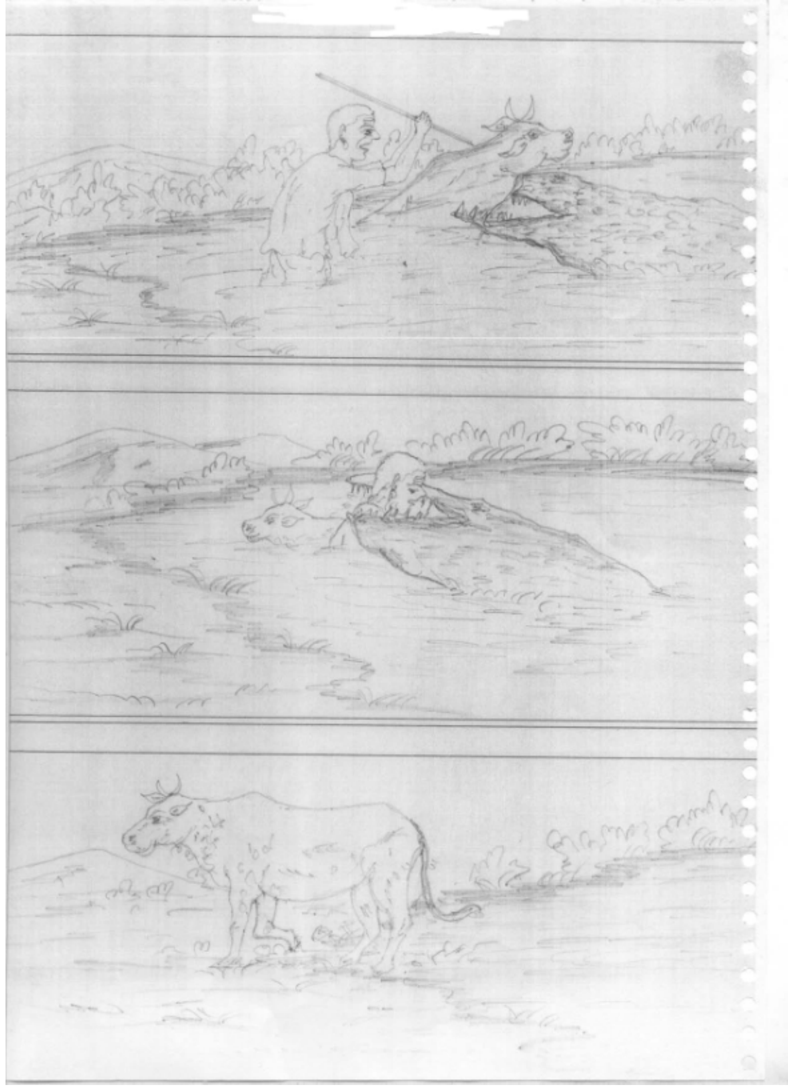


धर्मात्मा

धर्मात्मा होइ छथि तियागी
तियागी कहल केकरा जाए यौ भैयारी
वएह ने
जे केलनि तियाग
आकि ओ
जे भोग केलनि वेसुमार।

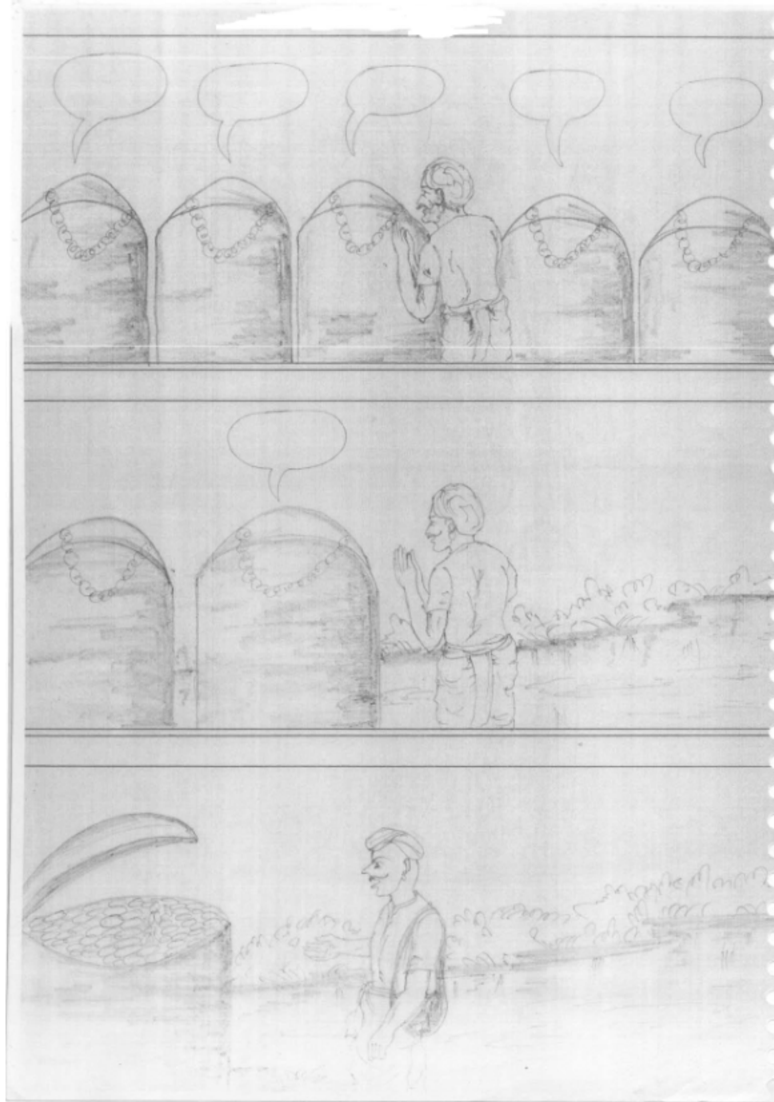
मजदूर, हरबाह
भिनसरसँ साँझ धरि
सभ देह धुनैए
उचित बोनि मात्र दू सेर पबैए

एक सेर बेच लऽ दोकान जाइए
नोन, तेल, हरदी, गोटी किनैए
बचलाहा एक सेरसँ सभो परानी पेट चलबैए
भरि दिन तँ ओहो खटबे करैए
अहीं कहू,
ई केहेन मशीन एले
हिसाब जोड़ैकाल
ऊपरे-ऊपर नजरि दौड़ौलकै
एकर तियागपर नजरि नै खिड़ैलकै
भागीकेँ धर्मात्मा कहि गेलै।



खास

खास जगहक खास आदमी
खास जिनगीमे खास बात
देशक नामपर भऽ रहल अछि ई खास
मुदा
जखने देश एक परिवार
सभकँ चाही रोजगार
खुशी चाही सबहक घर-द्वार
आकि इहोमे करबै बेपार
गुजरि गेल मध्यकाल आ भक्तिकाल
मुदा
पाछु मुँहे लुढ़कल किएक जाइ छी यौ महराज।



तीनटा लघु कविता

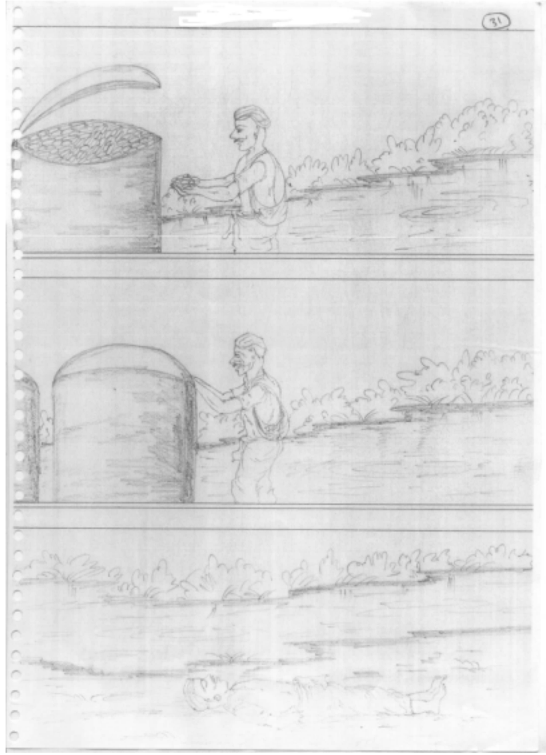
१

प्रकाश
ज्ञानक परकाश
जाइत अछि ओत्त तक
जत्त कियो नहि जा सकत हठात्
मुदा
ज्ञानो भऽ जाइत अछि गुलाम
सांकृत्यायन पड़ै छथि मोन घराम।

२

हनहनाइत, भनभनाइत ओइ स्वरकेँ
सुनैले नहि छथि कियो तैयार
जाह्मे मात्र ओ मात्र गाओल जाइत अछि
सनातन गीत
कियो नहि बनए चाहैत छथि मीत
करए जे पड़तनि हुनक दर्दसँ प्रीति।

३
भकोभन ओइ अन्हार कोठरीमे
जइमे काजर सन कारी राति दिनो कऽ बुझाइत
अहीं कहु यौ भाय
तखन शीशामे कोना देखाएत
ओकर चित्र कोना अएत?

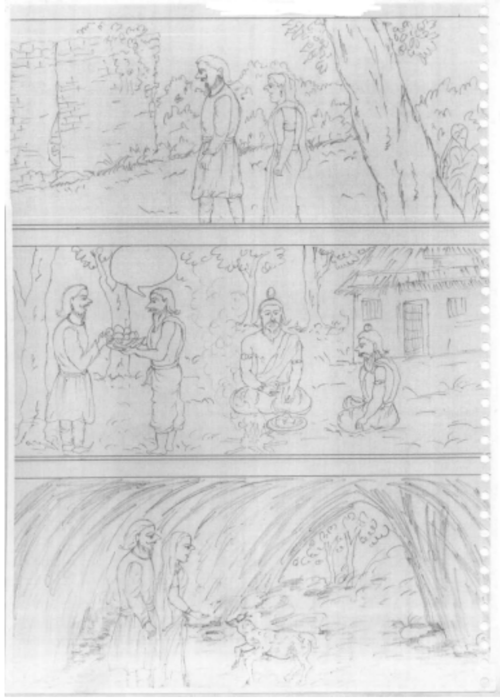


श्रोता

भागवत वाचन शुरू भेल
श्रोता सभ आबि-आबि जगह लेल
चारि तरहक श्रोता बैसल छथि
अपन-अपन काज-ध्यानमे मग्न छथि
बाचको आ श्रोतो

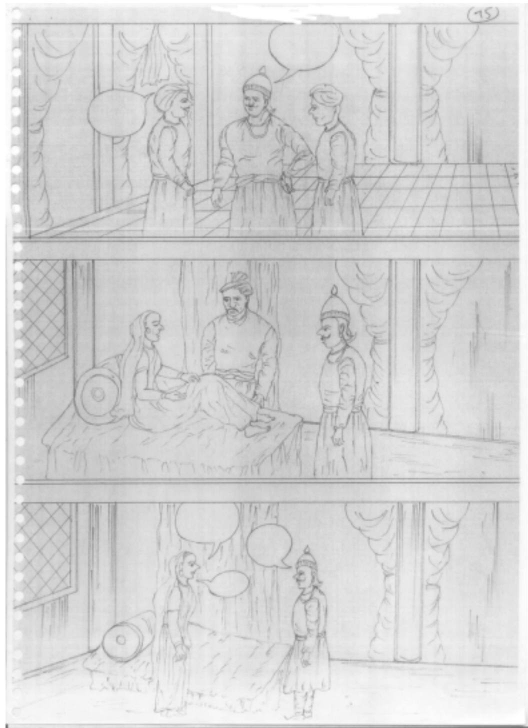
एक तरहक श्रोता
भागवत सुनि नीकक प्रचार करै छथि
दोसरोकेँ नव गप्पसँ अवगत करबै छथि
मुदा दोसर
दोसर श्रोता अंगीकार करै छथि
मुदा बजै नहि छथि बिना पुछने
तेसर श्रोताक देखियो
बैसल छथि भागवत प्रबचनमे
मुदा ध्यान छन्हि व्यापार मंडलमे
घुरिआइत-नुरिआइत
स्पष्ट अछि जे किछु नै पेला ई
प्रसादटा खेला ई

चारिम श्रोतापर करू विचार
ई छथि मुदा सदाचार
सुनितो छथि आ गबितो छथि
अपन जिनगीक क्रियासँ मिलैबतो छथि
ओतबे नहि
डेन पकड़ि पछुएलहाकेँ खिचितो छथि
आ
ठमकलहाकेँ धक्का सेहो लगबैत छथि।



कल्याणी

कल्याणी नाओसँ लगैत अछि जेना
केने हेती ई किछु एहेन काज
जहिसँ भेल हएत कल्याण
वा हेतै कल्याण
मुदा से भेल आकि नहि भेल
एत्ते धरि जरूर भेल
भाग्य-तकदीर सभसँ पैघ होइत अछि
से कहि जरूर गेलि।



देश

हमर देश
किछु लोक खेल रहल छथि धुरखेल
खुट्टीसँ आगाँ पड़ल बड़का देवाल
देवालक भीतरे लागल अछि मड़कड़ी चारूकात
इजोत चकचकाइत अछि
दिने जकाँ राइतो बुझाइत अछि
चुट्टी-पिपड़ी छोड़ि सभ किछु देखाइत अछि
मुदा
देवालक अंतिम खुट्टीसँ ओम्हरे
भऽ रहल अछि मनोरंजन
हेबक सेहो चाही
जरूरतसँ ऊपर उठि गेलापर

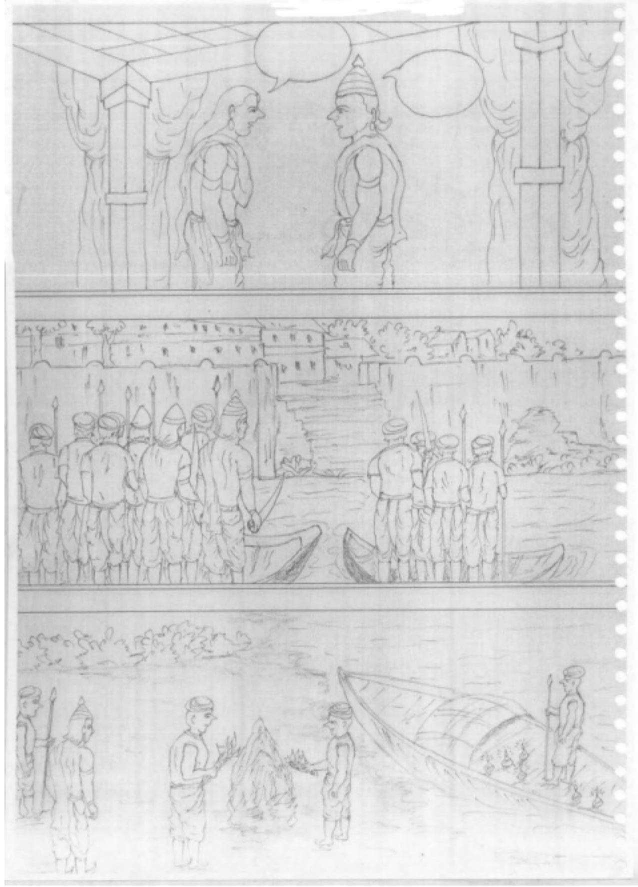
स्वभाविक अछि

मुदा देवालसँ इम्हर
बोन-झार सदृश्य मनुक्खक जरल रूपक
खेखनैत स्वर कियो सुनैबला नहि
चारि तरहक नाओ रचैबला लोक
देशक भीतरेमे बड़का देवाल ठाढ़ करैमे
अपनो उड़ैलनि होश
कऽ रहल छथि किलोल
हमर देश अछि अनमोल
एक्कैसमी शदीमे चलि रहल अछि ताबड़तोर

आश्चर्य
चहारदेवालीक भीतर मात्र ई गनगनाइत अछि बोल
भऽ रहल अछि भोजक बदला भोज
मात्र ओम्हरे अछि ई गरदमगोल
माने चहारदेवालीक ओहि पार
पुंगबैत अछि अपनाकेँ मनोरंजन योग

परती-पराँतमे रहएबला दिनकट्टू
जनमे काल भेल छल मइटूगर
छेँटगर होएबासँ पहिने
ई कहबैत छल दूधकट्टू
आइ दुनू हाथ जोड़ि
दू साए फीट एन.एच. सड़कक कातमे

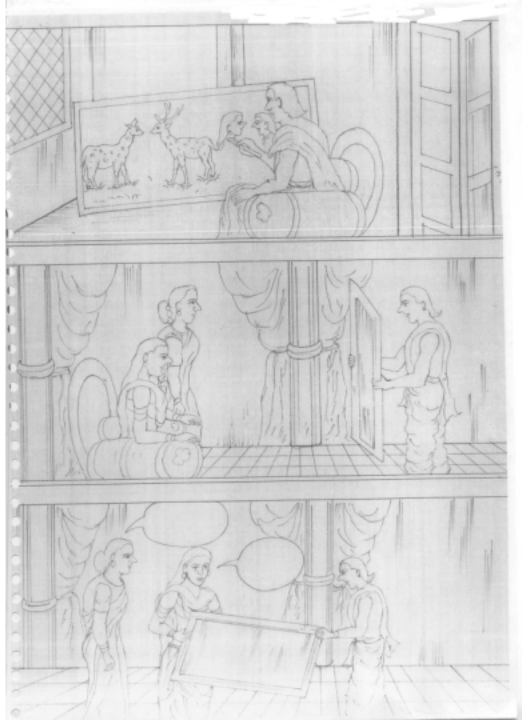
हजारक-हजार कहबैत अछि दिनकट्ठू
पएरमे चट्टी नहि छै पहिरैले
चलऽ मुदा पड़तै पक्की सड़कपर
शीशा-काँटी पसरल सड़कपर
खाइ-पीबैक नहि छै जोगार एकरा
आ नै छै कोनो रोजगार
चारूभरसँ खाली सुनै छै
- जल्दी जोड़ि लैह सरोकार तूँ
एक्केस्मी सदीक समाज तूँ।



भाषा भेद

हमरा सबहक माथपर
पसरल अछि मरलत्ती जकाँ किछु
कियो सुचिंतक नहि जे
चिंतन करता एहिपर
ई कथी लतड़ल अछि सभपर
मुदा दुर्भाग्य
एहिमे छिपल अछि किछु बात
जाहिमे अछि नहि एक्कोटा पात
सबहक कहब छन्हि
''ई आगाँ चलि कऽ
करत प्रदूसन साफ
जीबैक लेल स्वच्छ हवा-बसातक
अछि जहिना खगता

करत ई दूर सबहक बेगरता।”
देखा चाही ई दूर करत प्रदूसन
आकि करत सभकेँ निपत्ता।



नोर

गोरसपट टकधियान लगेने

मुन्रिया बैसलि अकानैए

घर-अंगन, द्वारि-दरबज्जा

भोरे सभ दिन बहारैए

बर्तन-वासन, छिपली-कटोरी

सभ दिन चमका कऽ मांजैए

झक-झक झलकैत

थारी-बाटी देख

मुन्निया माए गुनगुनाइए

गुनगुन्नीमे अह्लाद भरल छै

सुख-दुख सेहो उमरल छै

मुन्निया आब छोड़त ई दुन्यिा।

माइयक आँखिक नोर

मुन्नियाक हृदएमे उठबैत हिलकोर

भऽ जाइत अछि बेहोश।

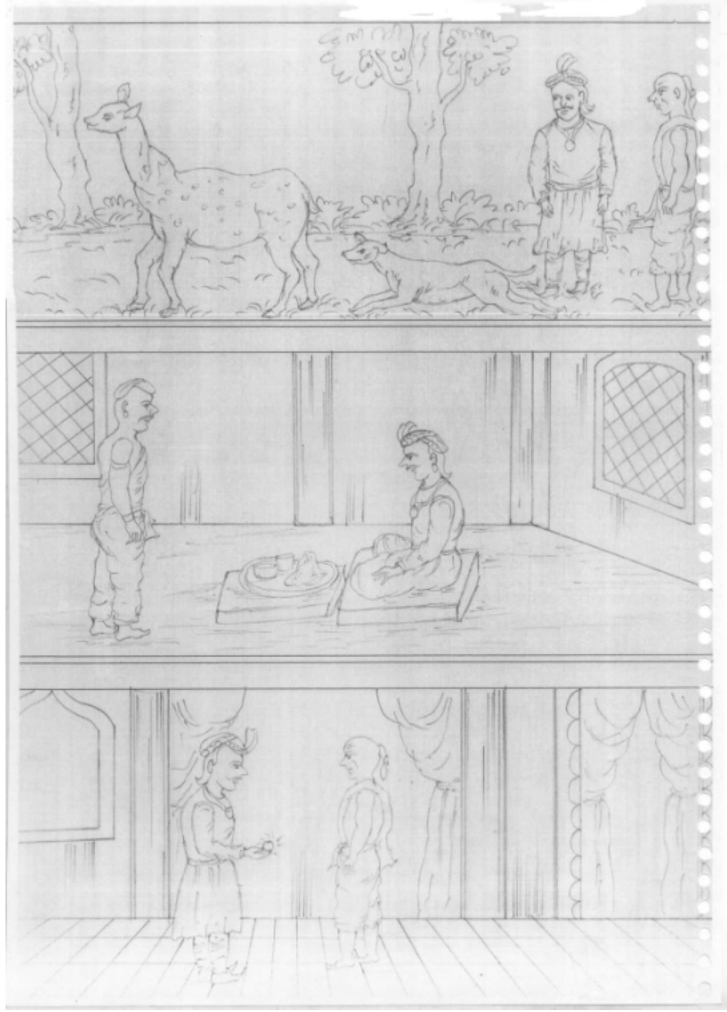
होश अबिते फेर अकानैए

आँखिक नोर निङहारैए

माइयक मन टटोलैए

सुखक नोर आ दुखक नोर
दुनू एक्के संग टघरैत-झहड़ैत
माएक चेहरापर देखैए
खूर-खूर, खूर-खूर काजौ करैए
घर-आंगन सम्हारबो करैए।

मुन्निया मुदा ई बुझि नै पबैए
की खुशी आ की दुख, एक्के संग
माइयक आँखिमे ई नै पबैए
यएह बेवसी मुन्नियाकेँ सतबैए।



किछु हाइकू

१

मेघ लटकै
प्रकाश छिरियाइ
प्रकृति गाबै

२

मेघ लटकै

प्रकाश छिरियाइ
प्रकृति नाचै

